



कनक हरलालका

ई-मेल: harlalkakanak@gmail.com

भस्मासुर

धॉय..धॉय.. धॉय..

धड़ाम...धड़ाम... आग...गोला... बारूद...

फैलते हुए भीषण युद्ध की आग में गाँव के गाँव, शहर के शहर झुलसते जा रहे थे। मनुष्य की लिप्सा की गूँज सायरन, तोप, गोले, मिसाइलों के धमाकों में प्रतिध्वनित हो रही थी। आवाजें थीं तो चीख-पुकार और आर्तनादों की। किन्तु फासले पर जंगल में सन्नाटा फैला हुआ था। खोहों में छुपे खूँखार

जानवर तक सहमे हुए अपनी गुफाओं में दुबके हुए थे। पेड़ों पर कोटरों में स्तब्ध पक्षी अपने परों में नन्हें बच्चों को छुपाए हुए थे। आकाश में सुकून और शांति के बादलों का कहीं नामोनिशान नहीं था। तभी, दूर एक धमाका गूँजा और चिड़िया माँ ने देखा— उसके परों में छिपी उसकी नन्हीं चिड़िया का शरीर डर की आग में टंडा पड़ गया था।

मुआवजा

नदी के उस पार माँ का मेला लगता था। हर वर्ष ही लगता था, पर इस बार बहुत अनहोनी हो गई थी। इस पार के लोग जब नदी पार करके मेले में माँ के दर्शन करने जा रहे थे सरकार ने बिना सूचना के अचानक बाँध के दरवाजे खोल दिए थे। हरहरा कर जो पानी आया था उसमें, इस पार के न जाने कितनों का घर-संसार बह गया था। लोगों की चीख पुकार व विपक्ष के सवाल खड़े करने पर प्रदेश के मुख्यमंत्री जी आज घटना-स्थल पर पहुँचे

थे। आते ही उन्होंने एस.डी.एम और एस.डी.ओ.पी. के तबादले के आदेश दे दिये एवं जिनके घर जल प्रवाह के कारण मौत का तांडव हुआ था। उनके लिए दो-दो लाख सहायता राशि की मुनादी कर दी। विमला, जिसका पति भी इस जलप्रवाह की भेंट चढ़ गया था, उसे इन दो लाख रुपयों में अपने पति के वे दो हाथ कहीं नजर नहीं आ रहे थे जिन्होंने उसे जिन्दगीभर सहेजकर ले चलने का वायदा किया था।